एक पत्र की आत्मकथा

मैं एक पत्र हूँ। मैं उम्र में बहुत बड़ा नहीं हूँ। हाल ही में मेरा जन्म हुआ 18 अगस्त 1998 को। मेरा जन्म स्थल काँटावाड़ी, जिला बैतूल है। हुआ यह कि काँटावाड़ी में एक लड़की रहती है। नाम है उसका शांति। शांति चौथी की छात्रा है। शांति का एक चचेरा भाई है, रमेश। रमेश रहता है दिल्ली में। शांति और रमेश का एक दूसरे से बड़ा नियमित पत्र व्यवहार चल रहा है। पहले रमेश भोपाल में रहता था। इसलिए वह शांति से अक्सर मिलता रहता था। पर जबसे रमेश के माता-पिता दिल्ली में जा बसे उनका मिलना-जुलना बंद हो गया है। दिल्ली काँटावाड़ी से दूर उत्तर भारत में है। दिल्ली जाने के बाद रमेश को सब कुछ नया और अजीब सा लगा। पहले-पहले उसे कुछ अकेलापन भी महसूस हुआ। पर एक तरह से उसे उस नए माहौल में मज़ा भी आ रहा था। उसने दिल्ली के बारे में सारी बातें शांति को लिख डालीं और उससे घर की खबर पूछी। शांति ने फिर रमेश को एक लम्बी चिट्ठी लिखी। इस तरह उनका पत्र व्यवहार बढ़ता गया।

18 अगस्त की शाम शांति ने एक सुन्दर-सी राखी बनाई। उसने रमेश को एक पत्र लिखा और एक लिफाफे में पत्र व राखी को बंद कर दिया। इस तरह मेरा जन्म हुआ। शांति की माँ दूसरे दिन पास के एक शहर शाहपुर जाने वाली थीं। शांति ने मां से कहा कि ज़रा रमेश की चिट्ठी शाहपुर की पत्र-पेटी में डाल देना ताकि वह दिल्ली जल्दी से पहुँचे। शांति की माँ ने मुझे लेकर एक थैली में डाल दिया। रात भर मुझे बहुत उत्सुकता रही कि कल मैं कहाँ जाऊँगा और उसके बाद क्या होगा? दूसरे दिन सुबह-सुबह बैलगाड़ी में बैठकर हम शाहपुर पहुँचे। शाहपुर में काफी भीड़-भाड़ और चहल-पहल थी। मैं इसका मज़ा ले रहा था कि छप से मैं एक काली-सी गुफा में जाकर गिर पड़ा। शांति की माँ ने मुझे पत्रपेटी में डाल दिया था। पहले तो मैं उस नई जगह से काफी परेशान हुआ। मैं पत्रों के ढेर पर जा गिरा था। दूसरे पत्रों ने मेरे लिए जगह बनाई। फिर उन्होंने मुझ पर प्रश्नों की बौछार की। तुम

कहाँ से आ रहे हो? कहाँ जा रहे हो? तुम इतने मोटे क्यों हो? तुम्हारे अंदर क्या राखी है? इनके उत्तर देते-देते मेरी बाकी पत्रों के साथ दोस्ती हो गई। मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। यही थे मेरे कपड़े। मेरे कुछ दोस्त फीके-नीले रंग के थे, कुछ एक पीले कार्ड थे, कुछ सफेद या खाकी लिफाफे पहने हुए थे, कुछ लम्बे थे, कुछ चौड़े। ऐसे ही विविध रूप थे उनके। वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे।

अब मुझे चिन्ता होने लगी। मैं दिल्ली में रमेश के घर तक कैसे पहुँचूँगा? कहीं और पहुँच गया तो? किसी को कैसे पता चलेगा कि मुझे कहाँ जाना है?

एक सफेद लिफाफा जिस पर लाल व नीली धारियाँ बनी थीं, सबसे बातें करने लगा। कहने लगा, "पता है, मुझे कैनेडा देश जाना है। रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र है। इसलिए मैं रेल या बस से नहीं, हवाई जहाज़ से कैनेडा पहुँचूँगा। सुना है जब हवाई जहाज़ नहीं बने थे, तब समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाज़ों से पत्र भेजे जाते थे।"

तभी ताला खुलने की सी आवाज़ आई। पेटी में उजाला हुआ। किसी का हाथ अन्दर आया। और हम सब पत्रों को निकाल-निकाल कर एक थैले में डालने लगा। थैले में बंद होने से पहले मैंने देख लिया कि यह खाकी वर्दी पहने हुए डाकिया है। उसने पेटी में ताला डाला और हमारे बोरे को साईकिल पर रखकर चल पड़ा। रास्ते में रुक-रुक कर उसने तीन पेटियों में से पत्र निकालकर हमारे ऊपर डाल दिया। जल्दी ही हम शाहपुर डाकघर पहुँच गए। डाकिए ने हमारे बोरे को डाकघर की मेज़ पर उलट दिया। फिर वह एक भारी ठप्पे से हम पर लगे टिकट पर सील लगाने लगा- ठप ठपा ठप,.ठप ठपा ठप ठप उसके हाथ बड़ी तेज़ी से चल रहे थे। सील लगाना खत्म करके उसने हमें इकट्ठा किया और एक दूसरी मेज़ पर पटक दिया। मैंने सोचा अब कुछ देर चैन की साँस लेकर सुस्ता लूँ। पर वहाँ डाकघर के दो लोग आए और उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। इस तरह पत्रों के एक ढेर के बजाय दो ढेरियाँ बन गईं। एक बैतूल जिले की और एक ज़िले के बाहर की।

तब तक डाकघर की एक बाई दो खाकी बोरे लेकर मेज़ के पास आई और बोली ज़िले के बाहर वाली डाक आर.एम.एस. के बोरे में डाल दो और ज़िले वाली डाक बैतूल डाकघर के बोरे में।

डाकियों ने दोनों बोरों में उन दो अलग-अलग ढेरियों की डाक डाल दी। मुझे आर.एम.एस. के बोरे में डाला गया। मेरा दिल बैठा जा रहा था। "मुझे बैतूल क्यों ले जा रहे हैं? मुझे तो दिल्ली जाना है और ये आर.एम.एस. क्या बला है?" न जाने कैसे उस बोरे ने मेरे मन की बात सुन ली। मुझे सहलाते हुए बोलने लगा "दिल्ली बहुत दूर है। वहाँ तुम रेलगाड़ी से जाओगे। दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी बैतूल स्टेशन पर रुकती है, इसलिए मैं तुम्हें बैतूल आर.एम.एस. ले जा रहा हूँ। आर.एम.एस. का अर्थ है "रेलवे मेल सुविधा" - हर बड़े स्टेशन पर इसका कार्यालय है। यहाँ पर आसपास की डाक इकट्ठी की जाती है और दिशावार छाँटी जाती है। दक्षिण भारत की डाक (चिट्ठियाँ, पार्सल आदि) दक्षिण की ओर जाने वाली ट्रेन में, उत्तर की चिट्ठियाँ उत्तर की ओर जाने वाली ट्रेन में भेज दी जाती हैं। तुम डरो नहीं हम तुम्हें सही ठिकाने पर पहुँचा देंगे।" मुझे बोरे की बात से तसल्ली हुई। उसकी बात खत्म भी नहीं हो पाई थी कि किसी ने हमें ताँगे में डाल दिया। मैंने बोरे से ही पूछा "क्या हम ताँगे से बैतूल जाएँगे?" वह बोला

"नहीं। ताँगे से हम बस स्टैण्ड तक जा रहे हैं। जिस बस से हमें शाहपुर से बैतूल जाना है उसका समय हो गया है।" बस स्टैण्ड पर हमें बस में पटक दिया गया। हम कब बैतूल पहुँचे, मुझे पता ही नहीं चला।

एकदम से किसी ने बोरे का मुँह खोला और बाहर की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं। एक डाकिये ने सारे पत्र बाहर मेज़ पर उलट दिये। 4, 5 लोग फुर्ती से आए और फिर शुरु हुई छँटाई। मैं ढेर के ऊपर की ओर था। मैंने जल्दी से अपने आस-पास नज़र दौड़ाई- एक बहुत बड़े कमरे में खूब सारे लोग थे- अलग-अलग मेज़ों पर छँटाई चल रही थी। लेकिन यह क्या? दीवार में खूब सारे छोटे-छोटे खानों वाली खुली अलमारियाँ थीं। ऐसे ही कुछ खाने आड़े में भी बने थे। हर खाने के ऊपर कुछ लिखा था। हमारे अलावा और बहुत सारे पत्र थे, बहुत सारे बन्द बोरे भी।

एक मैडम कुछ पत्र लेतीं और उन पर लिखा पता पढ़-पढ़ कर अलग खानों में डाल देतीं। मेरी बारी अब आई यह सोचकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। तभी मैडम ने मुझे एक अंधेरे से खाने में डाल दिया। उसके ऊपर लिखा था **दिल्ली।** वहाँ और भी कई सारे पत्र थे। उन सभी पर दिल्ली के पते लिखे थे। थोड़ी देर बाद एक डाकिए ने हमें निकाल कर एक बोरे में डाल कर बन्द कर दिया। बोरे में पड़े-पड़े मेरी नींद लग गई। हर थोड़ी देर में झटका पड़ता मानो बोरे को उठा कर कोई कहीं पटक रहा हो। जब मेरी नींद खुली तो ज़मीन हिल रही थी और छुक-छुक -छुक-छुक की आवाज़ आ रही थी। लगातार यह आवाज़ आती रहती थी। रेलगाड़ी को छुक-छुक गाड़ी भी कहते हैं- यह मैंने सुना था। मैं समझ गया कि मुझे बैतूल स्टेशन से दिल्ली की रेलगाड़ी में चढ़ा दिया गया है।

पूरे 18 घंटे चलने के बाद हम दिल्ली स्टेशन पहुँचे। गाड़ी से निकाल कर हमें एक लाल रंग की छोटी बस में लाद दिया गया। इस तरह मैं दिल्ली के बड़े डाकघर पहुँचा। वहाँ के डाकिये ने मुझे अपनी थैली में डाल दिया और हम सायकिल पर निकल पड़े। हर जगह मेरी मुलाकात नए पत्र मित्रों से होती और मेरे पुराने साथी छूटते रहते। डाकिये ने मुझे किसी के घर के दरवाज़े के नीचे से अंदर सरका दिया। थोड़ी देर बाद रमेश की माँ बाहर से घर आई तो उन्होंने मुझे उठाकर मेज़ पर रख दिया। शाम को जब रमेश घर लौटा तो मुझे पाकर वह बहुत खुश हुआ। राखी के दिन रमेश ने शान्ति द्वारा भेजी गई राखी बांधी और मुझे उठाकर और पत्रों के साथ एक अलमारी में रख दिया। यहीं अब मैं एक आराम की ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।

- *तुम्हारे घर में कहाँ-कहाँ से पत्र आते हैं- पता लगाओ।*
- *यदि कोई पत्र तुम्हारे गांव से नागपुर जाना है तो वो कैसे-कैसे जाएगा- पास के डाकघर या डाकिये से पता लगाकर लिखो।*

अभ्यास के प्रश्न :

1. पत्र कब, कहाँ, किस के द्वारा और किसको लिखा गया?
2. क्रम में जमाओ। वाक्य आगे पीछे हो गए हैं। पत्र पहले कहां पहुँचा, फिर कहां, फिर कहां से दिल्ली

1. कांटावड़ी से शाहपुर	2. रेलगाड़ी से दिल्ली
3. बस से बैतूल	4. छंटाई का कार्य
5. बंडल बंधे शाहपुर में	6. दिल्ली में डाकिए द्वारा रमेश के घर में

3. अपने मित्र को अपनी छुट्टियों के बारे में पत्र लिखो।
4. किन-किन साधनों से डाक पत्र पेटी से डाक घर, डाक घर से स्टेशन, स्टेशन से बड़े शहर पहुंचती है? इनके चित्र बनाओ।
5. पत्तों की छंटाई कहाँ-कहाँ और कैसे हुई? 4 - 5 वाक्यों में लिखो।
6. पत्र की इस यात्रा का विवरण संक्षेप में कापी में लिखो (10- 15 लाईन में)
7. मनीआर्डर क्या है? क्या तुमने कभी मनीआर्डर का फार्म देखा है? इस पर कक्षा में बातचीत करो।
8. ज़रूरी संदेश जल्दी भेजने के लिए हम क्या करते हैं? क्या तुमने कभी तार भेजा है? इसके बारे में कक्षा में चर्चा करो। तुम अपनी कापी में 2 - 3 वाक्यों के तार का एक संदेश लिखो।
9. खाली जगह भरो -

लिफाफा	लिफाफों
पेटी	----------
----------	पत्रों
कबूतर	----------
----------	थैलियों

10. कल्पना करो कि तुम एक डकिया हो। डाकिये के एक दिन के सफर का वर्णन करो।

पत्र

मित्र को पत्र (मेला देखने के लिए बुलाना)

शाहपुर,
15 मई, 2000

प्रिय प्रदीप

तुमको याद होगा कि सावन के महीने में हमारे यहाँ एक मेला लगता है। यह बहुत बड़ा मेला है। इसमें दूर–दूर से लोग आते हैं। कई तरह की दुकानें आती हैं, सरकस, सिनेमा और तरह–तरह के झूले आते हैं मेला बड़ा सुन्दर होता है।

मेरी इच्छा है कि इस साल तुम मेला देखने आओ। हम लोग साथ–साथ मेला देखने चलेंगे। हमारे साथ दीदी, भैया और मेरे दोस्त भी चलेंगे। तुम जरूर आना।

माँ व बाबूजी को प्रणाम। दीदी, भैया और तुम सबको नमस्ते।

तुम्हारा
रवि

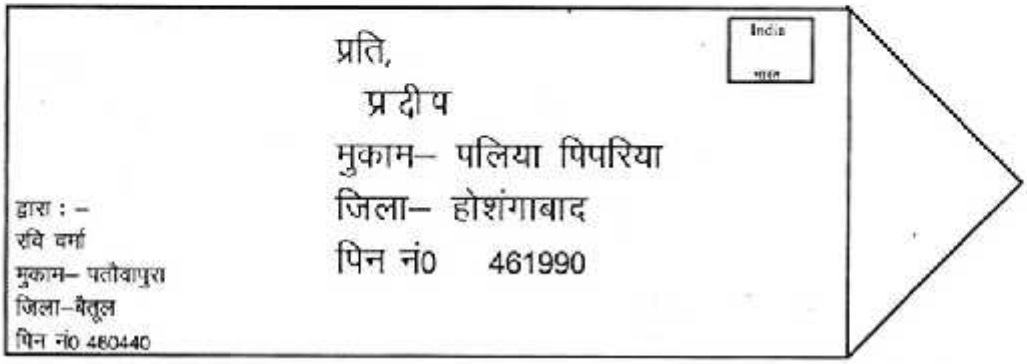

उपर लिखे पत्र को ध्यान से पढ़ो और बताओ।

1. पत्र के दाएँ हिस्से पर सबसे ऊपर क्या लिखा है।
2. इसके बाद क्या लिखा है।
   इसके बाद पत्र शुरू होता है।
3. पत्र में क्या–क्या बातें हैं।
4. अंतिम पैराग्राफ में क्या लिखा है।
5. अंत में नीचे दाहिनी ओर क्या लिखा है।
6. पता कहाँ और कैसे लिखा है।
7. भेजने वाले का पता कहाँ लिखा है।

अब एक पत्र में क्या क्या बातें होना जरूरी हैं, यह सोचकर अपने मन से कोई पत्र लिखो।

एक पत्र / आवेदन पत्र अपने प्रधानाध्यापक को छुट्टी के लिए लिखो।

दिनांक 06.07.2000

प्रधानाध्यापक,
नवीन प्राथमिक शाला
शाहपुर।

विषय : एक दिन की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

मैं यह बताना चाहता हूँ कि मैं एक दिन के लिए अपने माता पिता के साथ जबलपुर जा रहा हूँ। इसलिए मैं दिनांक 6.7.2000 को स्कूल में नहीं आ पाऊँगा।
अतः आप मेरी एक दिन की छुट्टी स्वीकृत करने का कष्ट करें।

धन्यवाद सहित।

आपका प्रिय छात्र/छात्रा

नाम – प्रेमलाल मालवीय
कक्षा – 5वी
नवीन प्रा.शा.शाहपुर।

दिनांक 7.5.2000

एक अच्छे पत्र को लिखने के लिए नीचे लिखे सभी बिन्दुओं का समावेश होना जरूरी है।

1. पत्र के दाएँ हिस्से पर सबसे ऊपर क्या लिखा है। दिनांक
2. इसके बाद बाएँ हिस्से पर क्या लिखा है। प्रधानाध्यापक, स्कूल का नाम
3. संबोधन। महोदय,
4. पत्र का विषय क्या है। एक दिन की छुटटी के लिए आवेदन पत्र
5. पत्र की विषय वस्तु क्या है। (वर्णन) हेमराज अपने माता–पिता के साथ घूमने जबलपुर जा रहा है इसलिए वह स्कूल में एक दिन की छुट्टी स्वीकृत करने की बात कह रहा है।
6. भावना के शब्द क्या हैं। धन्यवाद सहित।

नीचे लिखे शब्दों को खाली स्थान में भरो।

शाहपुर, 4/10/2000, प्रणाम, पास हो चुका हूँ, मैं प्रवेश लेना चाहता हूँ। 200 रू. रूपये भेजे, उरू मालवीय

पत्र

स्थान _____

दिनांक _____

आदरणीय बाबूजी,

_____

मैं इस वर्ष कक्षा 5 वीं की परीक्षा _____ ____ _____ ____

अब मैं आगे की पढाई हेतु कक्षा छटवीं ____ _____ ____ _____ _____।

इसके लिए मुझे _____ ____ की जरूरत होगी। कृपया आप रूपए भेज दें।

सभी को प्रणाम।

आपका सुपुत्र

_____

_____

मित्र को पत्र

प्रेय मित्र रमेश,

स्थान – उज्जैन

दिनांक 17.9.2000

नमस्ते।

मैं यहाँ कुशलता पूर्वक हूँ। आशा है आप भी सपरिवार कुशलपूर्वक होंगे। मैं शाहपुर में कक्षा 5 वीं की परीक्षा देने आया हूँ। मेरे तीन पेपर अच्छे गए हैं। आशा है मैं उनमें पास हो जाऊँगा। कल आखिरी पेपर देकर मैं तुमसे मिलने भौंरा आ रहा हूँ । तुम शाम 5 बजे बस–स्टैंड पर जरूर मिलना। फिर हम घूमने चलेंगे।

टिकट

पता

रमेश राठी

मु. भौरा पोस्ट भौंरा

तह. शाहपुर, जि.बैतूल

पिन कोड

आपका मित्र

कैलाश